महाप्रसाद

कुन्ती गिरॉन

वह अक्टूबर १९८१ की पतझड़ का एक उजला दिन था। श्री नित्यानन्द आश्रम [जो अब श्री मुक्तानन्द आश्रम के नाम से जाना जाता है] के सभी आश्रमवासी और विज़िटिंग सेवाकर्ता नीचे की लॉबी में एकत्रित हुए थे। अगले ही दिन बाबा जी गुरुदेव सिद्धपीठ लौटने वाले थे। यह बाबा जी की तीसरी विश्वयात्रा का समापन-दिवस था।

बाबा जी अपने निवास-स्थान से बाहर आए और नीचे की लॉबी में उन्होंने अपना आसन ग्रहण किया। हम सभी उनके चारों ओर ज़मीन पर बैठ गए; पूरी जगह भर गई थी। बाबा जी के भारत लौटने के बाद, जो सेवाकर्ता श्री नित्यानन्द आश्रम में रहकर सेवा अर्पित करने वाले थे, उन सभी से बाबा जी ने विदाई के कुछ शब्द कहे।

बाबा जी जो-जो शब्द कह रहे थे मैं उसे बड़े ध्यान से सुन रही थी और पूरी तरह अपने अन्दर उतरने दे रही थी। एक समय पर बाबा जी रुके और उन्होंने एक ओर से दूसरी ओर तक अपनी दृष्टि घुमाई—उन्होंने दीवारों को देखा, छत को देखा, खिड़कियों के बाहर बगीचों को देखा।

बाबा जी ने कहा : "मैंने यह सब कभी नहीं चाहा था। मैं बस इतना ही चाहता था कि अपने आम के पेड़ के नीचे बैठकर भगवद्भजन करूँ। मेरे बाबा के कारण ही यह सब कुछ हुआ है। मैंने अपने गुरुदेव के आदेश का पालन किया और यह सब हो गया।"

जब मैंने बाबा जी को यह कहते हुए सुना, मेरा हृदय अत्यन्त द्रवित हो उठा। उनके शब्दों ने मुझे एक गहरी समझ प्रदान की कि शक्तिपात तथा सिद्धयोग की सिखावनियों का महाप्रसाद विश्वभर के जिज्ञासुओं तक पहुँच सके इसके लिए बाबा जी ने अपने जीवन में बहुत कुछ किया था।

अपने श्रीगुरु के प्रति बाबा जी के प्रेम और उनके द्वारा अपने श्रीगुरु के आदेश का पालन करने के कारण ही, मैं और अन्य हज़ारों जिज्ञासु—वर्तमान समय के और आने वाले समय के जिज्ञासु भी—सिद्धयोग गुरुओं की कृपा और आशीर्वाद प्राप्त कर पा रहे हैं। उस दिन लॉबी में वह बहुत अनमोल क्षण था जब

बाबा जी ने हमें उस कल्याणकारी परिणाम के बारे में बताया जो उनके द्वारा अपने गुरुदेव की आज्ञा-पालन का फल था।

मैं सदैव बाबा जी के प्रति कृतज्ञ रहूँगी कि उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन अपने श्रीगुरुदेव की और समस्त मानवजाति की सेवा में समर्पित कर दिया।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।